I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

राजगढ़ जिले के प्रमुख ठिकानों का ऐतिहासिक अध्ययन

किशोर मालवीय
शोधार्थी, इतिहास विभाग, पीएम कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय उज्जैन
मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * किशोर मालवीय

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20784554

सारांश

राजगढ़ जिला मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भू-भाग है। इस क्षेत्र में राजगढ़, नरसिंहगढ़, खिलचीपुर, जीरापुर, ब्यावरा तथा तलेन जैसे ठिकानों का विकास विभिन्न राजवंशों एवं सामंतों के संरक्षण में हुआ। ये ठिकाने न केवल प्रशासनिक एवं सैन्य दृष्टि से महत्वपूर्ण थे, बल्कि सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास के प्रमुख केंद्र भी रहे। प्रस्तुत शोध-पत्र में राजगढ़ जिले के प्रमुख ठिकानों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्थापना, राजनीतिक विकास, सांस्कृतिक योगदान तथा प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 12-05-2026
- **Accepted:** 18-06-2026
- **Published:** 21-05-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 1039-1041
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

किशोर मालवीय. राजगढ़ जिले के प्रमुख ठिकानों का ऐतिहासिक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):1039-1041.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: राजगढ़ जिला, ठिकाना व्यवस्था, सामंती शासन प्रणाली, मालवा क्षेत्र, राजगढ़ राज्य, नरसिंहगढ़ ठिकाना, खिलचीपुर ठिकाना, जीरापुर ब्यावरा, उमट परमार राजपूत, परमार वंश ।

© 2026 किशोर मालवीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारत के मध्यकालीन इतिहास में ठिकाना व्यवस्था सामंती शासन प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग रही है। ठिकाने स्थानीय शासन, सुरक्षा, राजस्व संग्रह तथा सांस्कृतिक संरक्षण के केंद्र होते थे। मालवा क्षेत्र में स्थित राजगढ़ जिले का इतिहास अनेक रियासतों और ठिकानों से जुड़ा हुआ है। वर्तमान राजगढ़ जिला 1948 में मध्य भारत राज्य के गठन के पश्चात अस्तित्व में आया, किंतु इसके पूर्व यह क्षेत्र राजगढ़, नरसिंहगढ़, खिलचीपुर, देवास तथा इंदौर राज्यों में विभाजित था। राजगढ़ राज्य पर उमट परमार राजपूतों का शासन था, जो परमार वंश की शाखा माने जाते हैं। इन शासकों ने क्षेत्र में अनेक ठिकानों की स्थापना कर राजनीतिक संगठन को सुदृढ़ बनाया।

राजगढ़ जिले के ठिकानों का अध्ययन मध्य भारत की सामंती संरचना, प्रशासनिक संगठन तथा सांस्कृतिक विकास को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन ठिकानों के माध्यम से स्थानीय शासन व्यवस्था, सैन्य संगठन, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जा सकता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

1. राजगढ़ जिले के प्रमुख ठिकानों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. राजगढ़, नरसिंहगढ़ एवं खिलचीपुर जैसे ठिकानों की स्थापना एवं विकास का विश्लेषण करना।
3. ठिकाना व्यवस्था की प्रशासनिक एवं राजनीतिक भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. ठिकानों के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक योगदान का अध्ययन करना।
5. राजगढ़ जिले के ऐतिहासिक विकास में ठिकानों की भूमिका का परीक्षण करना।

3. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में जिला गजेटियर, राजकीय अभिलेख तथा प्रशासनिक दस्तावेज सम्मिलित हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में इतिहास संबंधी पुस्तकें, शोध आलेख, राजगढ़ जिला प्रशासन की आधिकारिक वेबसाइट तथा प्रकाशित ऐतिहासिक ग्रंथों का उपयोग किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति द्वारा किया गया है।

राजगढ़ ठिकाना

राजगढ़ राज्य का इतिहास परमार वंशीय उमट राजपूतों से संबंधित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार मोहन सिंह उमट ने लगभग 1640 ई. में भीलों से झांझनीपुर नामक क्षेत्र प्राप्त किया और 1645 ई. में इसे अपनी राजधानी बनाकर राजगढ़ नगर की स्थापना की। इससे पूर्व राज्य की राजधानी दुपारिया, डूंगरपुर और रतनपुर रही थी। मुगल सेना के निरंतर आवागमन से सुरक्षा की दृष्टि से राजधानी को राजगढ़ स्थानांतरित किया गया।

राजगढ़ राज्य ब्रिटिश काल में सेंट्रल इंडिया एजेंसी की भोपाल एजेंसी के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण रियासत था। यह मालवा क्षेत्र के उमटवाड़ा भाग में स्थित था तथा इसका क्षेत्रफल लगभग 2,492 वर्ग किलोमीटर था। कृषि एवं अफीम व्यापार इसकी अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधार थे।

नरसिंहगढ़ ठिकाना

नरसिंहगढ़ राज्य राजगढ़ राज्य की शाखा के रूप में विकसित हुआ। 1681 ई. में राजगढ़ राज्य के विभाजन के फलस्वरूप नरसिंहगढ़ राज्य की स्थापना हुई। यह राज्य अपने भव्य दुर्ग, महलों और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध रहा। नरसिंहगढ़ का किला मालवा की स्थापत्य परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मराठा तथा ब्रिटिश काल में नरसिंहगढ़ ने अपनी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान बनाए रखी। यहाँ के शासकों ने शिक्षा, धर्म तथा लोक संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नरसिंहगढ़ ठिकाना प्रशासनिक और सैन्य दृष्टि से राजगढ़ क्षेत्र का प्रमुख केंद्र था।

खिलचीपुर ठिकाना

खिलचीपुर राज्य की स्थापना 1544 ई. में खींची राजपूत शासक उग्रसेन द्वारा की गई थी। यह राज्य बाद में ब्रिटिश भारत की एक महत्वपूर्ण रियासत बना। खिलचीपुर का मुख्यालय वर्तमान राजगढ़ जिले में स्थित था। 1901 में इसका क्षेत्रफल लगभग 710 वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या 31,143 थी।

खिलचीपुर राजस्थान और मालवा के मध्य स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था। मराठा काल में यह क्षेत्र सिंधिया शासन के प्रभाव में आया तथा बाद में ब्रिटिश संरक्षण प्राप्त हुआ। यहाँ निर्मित राजमहल एवं दुर्ग तत्कालीन स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

जीरापुर एवं ब्यावरा ठिकाने

जीरापुर एवं ब्यावरा राजगढ़ राज्य के प्रमुख प्रशासनिक एवं व्यापारिक केंद्र थे। जीरापुर मालवा और राजस्थान के मध्य व्यापारिक संपर्क का महत्वपूर्ण स्थल था। वहीं ब्यावरा कृषि उत्पादों तथा व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था। इन क्षेत्रों में राजस्व संग्रह, व्यापार नियंत्रण तथा स्थानीय प्रशासन की महत्वपूर्ण व्यवस्था विकसित हुई।

ठिकानों का सांस्कृतिक योगदान

राजगढ़ जिले के ठिकानों ने क्षेत्रीय संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजपूत शासकों द्वारा मंदिरों, बावड़ियों, तालाबों तथा धर्मशालाओं का निर्माण कराया गया। धार्मिक उत्सव, लोकनृत्य, लोकसंगीत तथा लोककला को संरक्षण प्रदान किया गया। इन ठिकानों के कारण मालवा क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान विकसित हुई। आज भी राजगढ़, नरसिंहगढ़ और खिलचीपुर में अनेक ऐतिहासिक स्मारक इस गौरवशाली विरासत के साक्षी हैं।

4. निष्कर्ष

राजगढ़ जिले के ठिकाने मध्य भारत की सामंती शासन व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। राजगढ़, नरसिंहगढ़, खिलचीपुर, जीरापुर एवं ब्यावरा जैसे ठिकानों ने क्षेत्र के राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन ठिकानों ने न केवल प्रशासनिक स्थिरता प्रदान की, बल्कि स्थानीय संस्कृति, स्थापत्य कला

© 2026 किशोर मालवीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तथा सामाजिक जीवन को भी समृद्ध बनाया। राजगढ़ जिले के इतिहास को समझने के लिए इन ठिकानों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. कृष्णन VS. Madhya Pradesh District Gazetteer: Rajgarh. भोपाल: Government Central Press; 1996. पृ. 45-68.
2. Imperial Gazetteer of India. Vol. 8. Oxford: Oxford University Press; 1908. पृ. 123-126.
3. Luard CE. Western States (Malwa) Gazetteer. बंबई: Government Press; 1908. पृ. 210-228.
4. Rajgarh District Gazetteer. भोपाल: मध्यप्रदेश शासन; 1996. पृ. 31-72.
5. राजगढ़ जिला प्रशासन. इतिहास [इंटरनेट]. भोपाल: मध्यप्रदेश शासन; [उद्धृत 2026 जून 19]. उपलब्ध: https://rajgarh.nic.in
6. Khilchipur State. In: Imperial Gazetteer of India. Vol. 8. Oxford: Oxford University Press; 1908. पृ. 125.
7. राजगढ़ जिला प्रशासन. राजगढ़ जिला आधिकारिक वेबसाइट [इंटरनेट]. [उद्धृत 2026 जून 19]. उपलब्ध: https://rajgarh.nic.in
8. Rajgarh State. In: Imperial Gazetteer of India. Oxford: Oxford University Press; 1908. पृ. 146-149.
9. शर्मा RK. मालवा का राजनीतिक इतिहास. आगरा: साहित्य भवन; 2005. पृ. 221-235.
10. मिश्र KL. मध्य भारत की रियासतें. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन; 2008. पृ. 178.
11. सिंह भगवतशरण. मध्यप्रदेश का इतिहास एवं संस्कृति. भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2012. पृ. 301-318.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

किशोर मालवीय इतिहास विभाग, पीएम कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश के शोधार्थी हैं। उनकी रुचि भारतीय इतिहास, सांस्कृतिक विरासत एवं ऐतिहासिक अनुसंधान में है। वे विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं शोध गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता करते हैं तथा गुणवत्तापूर्ण अकादमिक अनुसंधान के प्रति समर्पित हैं।

© 2026 किशोर मालवीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/